सम्मानजनक संवाद की पुनर्स्थापना: बढ़ते ध्रुवीकरण के युग में तटस्थता का बचाव

UPSC प्रासंगिकता: **सामान्य अध्ययन पेपर-1 — समाज, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, और सामाजिक तनाव।**

समाचार में क्यों?

भारत और दुनिया भर में सार्वजनिक **संवाद** (public discourse) तेज़ी से शत्रुता, **ध्रुवीकरण** (polarisation), और वैचारिक कठोरता की ओर बढ़ रहा है। टेलीविज़न बहसें, सोशल मीडिया की बातचीत और यहाँ तक कि सामुदायिक स्तर की चर्चाएँ भी अब संवाद के स्थानों के बजाय युद्ध के मैदानों जैसी लगती हैं। इसने **तटस्थता में गिरावट**, नागरिक संवाद के **पतन**, और लोकतंत्र, शासन तथा सामाजिक सामंजस्य के लिए इसके निहितार्थों (implications) के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं।

पृष्ठभूमि

स्वस्थ लोकतंत्र हमेशा तर्कसंगत बहस, विविध विचारों के प्रति खुलापन और असहमति के सम्मान पर निर्भर रहे हैं। हालाँकि, **डिजिटल इको चैंबरों** (Digital Echo Chambers), **अति-पक्षपातपूर्ण मीडिया** (hyper-partisan media), और एल्गोरिदम-आधारित सामग्री के उदय ने लोगों के सार्वजनिक मुद्दों से जुड़ने के तरीके को बदल दिया है।

दार्शनिक **जे गारफील्ड** (Jay Garfield) चेतावनी देते हैं कि ध्रुवीकरण नागरिक संवाद को तोड़कर लोकतांत्रिक समाजों की नींव को कमज़ोर करता है। हाल के वर्षों में, तटस्थता को न केवल **नज़रअंदाज़** किया गया है, बल्कि **उसका मज़ाक** उड़ाया गया है, जिससे एक ऐसी राजनीतिक संस्कृति का निर्माण हुआ है जो संतुलित निर्णय के बजाय द्वैत (binaries) का पक्ष लेती है।

तटस्थता और नागरिक संवाद का क्षरण (Erosion)

लोकतांत्रिक समाजों में कभी केंद्रीय रहा **सम्मानजनक संवाद** अब चिल्ला-चोट, भावनात्मक हेरफेर और सनसनीखेज प्रस्तुति के सामने फीका पड़ गया है। कई सार्वजनिक मंच लगातार **सारगर्भिता** (substance) के बजाय **सनसनीखेजता** (sensationalism) को प्राथमिकता देते हैं।

- **तटस्थ आवाज़ों** को कमज़ोर, अवसरवादी, या अप्रासंगिक करार दिया जाता है।
- **संयम** और **संतुलन** को दृढ़ विश्वास की कमी बताकर खारिज कर दिया जाता है।
- मध्य मार्ग की वकालत करने वालों को, यहाँ तक कि एकजुट करने वाले समुदायों के भीतर भी, **उपहास** और **बहिष्कार** का सामना करना पड़ता है।

यह **निष्पक्ष निर्णय**—जो एक मुख्य लोकतांत्रिक गुण है—का अभ्यास करना कठिन बना देता है।

ध्रुवीकरण समाज को कैसे नया आकार दे रहा है

1. द्विआधारी सोच और कठोर विकल्प सार्वजनिक मुद्दों को तेज़ी से "**बाएँ बनाम दाएँ**," "**पक्ष में या विपक्ष में**" के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे बारीकियों के लिए कोई जगह नहीं बचती। यह जटिल, बहु-स्तरीय चुनौतियों से निपटने की समाज की क्षमता को कमज़ोर करता है।

2. मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म विभाजन को हवा देते हैं
टेलीविज़न स्टूडियो और सोशल मीडिया **टकराव को बढ़ावा** देते हैं क्योंकि आक्रोश से जुड़ाव बढ़ता है। एल्गोरिदम अत्यधिक सामग्री को पुरस्कृत करते हैं, जिससे **इको चैंबर** बनते हैं और **समरूपता** (Homophily - केवल समान विचारों वाले लोगों से जुड़ने की प्रवृत्ति) को बढ़ावा मिलता है।

3. भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक बोझ ध्रुवीकरण के कारण **पुराना तनाव, चिंता और भावनात्मक थकावट** पैदा होती है, खासकर निर्णय निर्माताओं, प्रशासकों और मध्यस्थों के लिए जो संतुलित निर्णय को महत्व देते हैं।

4. तटस्थता का दुरुपयोग कुछ कर्ता **चयनात्मक तटस्थता** (selective neutrality) का अभ्यास करते हैं, विरोधियों की गलतियों की निंदा करते हैं जबकि अपनी गलतियों को नज़रअंदाज़ करते हैं। यह **पाखंड** (hypocrisy) विश्वास को खत्म करता है और तटस्थता को सुविधा के एक उपकरण तक सीमित कर देता है।

बढ़ते ध्रुवीकरण के प्रभाव

1. लोकतांत्रिक संस्थानों पर प्रभाव

- **विधायिका (Legislature):** ध्रुवीकरण से नीतिगत गतिरोध (policy deadlock) या जल्दबाज़ी में **रबर-स्टैंप** वाले निर्णय होते हैं।
- **न्यायपालिका (Judiciary):** न्यायालयों को निष्पक्ष मध्यस्थों के बजाय **वैचारिक संस्थाओं** के रूप में देखा जाने लगा है।
- **कार्यकारी और नेता (Executives and Leaders):** नेताओं को व्यापक आबादी के प्रतिनिधियों के बजाय गुट प्रमुखों (faction heads) के रूप में देखा जाने लगता है।

2. सार्वजनिक संवाद पर प्रभाव **तर्कसंगत बहस** पर शत्रुतापूर्ण वाक्पटुता हावी हो जाती है, जिससे असहमति के लिए जगह कम हो जाती है और लोकतांत्रिक मानदंड कमज़ोर होते हैं।

3. सामाजिक सामंजस्य पर प्रभाव

- समुदाय वैचारिक रेखाओं के आधार पर **अलग-थलग** हो रहे हैं।
- सामाजिक नेटवर्क सिकुड़ते हैं, जिससे **विश्वास और सहयोग** कम होता है।
- कार्यस्थलों पर संघर्ष, भेदभाव और सहयोग में कमी आती है।

4. हिंसा और अतिवाद में वृद्धि ध्रुवीकृत संदर्भों में, **समूह निष्ठा** (group loyalty) लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर हावी हो जाती है, जिससे **घृणा अपराध** (hate crimes), राजनीतिक हिंसा और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा पैदा होता है।

5. डिजिटल हेरफेर और गलत सूचना ऑनलाइन स्थान उपयोगकर्ताओं को **विभाजनकारी सामग्री**, गलत सूचना अभियानों और भावनात्मक रूप से चार्ज किए गए आख्यानों (narratives) से भर देते हैं, जिससे वैचारिक विभाजन गहरा होता है।

IAS-PCS Institute

चुनौतियाँ / मुद्दे

- संस्थानों और विरोधी विचारों में **विश्वास में गिरावट**।
- पारंपरिक और डिजिटल मीडिया दोनों में बढ़ता **अति-पक्षपात**।
- नागरिकों के बीच **मीडिया साक्षरता** और **भावनात्मक लचीलेपन** (emotional resilience) की कमी।
- **आदिवासी राजनीति** (Tribal politics) के कारण समझौते को कमज़ोरी के रूप में देखा जाना।
- सनसनीखेजता के लिए बढ़ते **व्यावसायिक प्रोत्साहन**।
- गलत सूचना और डिजिटल ध्रुवीकरण से निपटने के लिए **कमज़ोर ढाँचे**।

अब तक के सरकारी उपाय

- **आईटी नियम 2021 और 2023 संशोधन** सोशल मीडिया मध्यस्थों को विनियमित करने के लिए।
- सरकारी मामलों पर गलत सूचना को रोकने के लिए **तथ्य-जाँच इकाइयाँ** (Fact-Checking Units)।
- स्कूल छात्रों के लिए NCERT और राज्यों द्वारा **मीडिया साक्षरता कार्यक्रम**।
- एल्गोरिदम और हानिकारक सामग्री को विनियमित करने के लिए **डिजिटल इंडिया अधिनियम** (मसौदा) को बढ़ावा देना।
- प्रसार भारती के तहत **सार्वजनिक प्रसारण मानकों** को मजबूत करने के प्रयास।

नोट: हालाँकि, नियम समाज की जिम्मेदारी और संवाद संस्कृति की जगह नहीं ले सकते।

आगे की राह (Way Forward)

1. नागरिक संवाद के माध्यम से विश्वास का पुनर्निर्माण समाज को **सुनने, सहानुभूति और विनम्रता** को प्राथमिकता देनी चाहिए। विरोधियों को दुश्मन के बजाय साथी नागरिकों के रूप में देखा जाना चाहिए।

2. मीडिया और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना स्कूलों, कॉलेजों और नागरिक समाज को नागरिकों को **गलत सूचना की पहचान** करने, **भावनात्मक हेरफेर का विरोध** करने और ऑनलाइन **नैतिक रूप से जुड़ने** का तरीका सिखाना चाहिए।

3. सार्वजनिक संस्थानों को मजबूत करना न्यायपालिका, विधायिका और नियामक निकायों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निर्णय **पारदर्शिता, निष्पक्षता और निरंतरता** को दर्शाते हैं ताकि पक्षपात की धारणाओं का मुकाबला किया जा सके।

4. बहु-हितधारक संवाद प्लेटफॉर्म को प्रोत्साहित करना सरकारों, विश्वविद्यालयों और सामुदायिक समूहों को **विचार-विमर्श वाले लोकतंत्र** (deliberative democracy) के लिए मंच स्थापित करने चाहिए, जहाँ भिन्न विचार रचनात्मक रूप से बातचीत कर सकें।

5. जिम्मेदार डिजिटल विनियमन चरम सामग्री के विस्तार को कम करने के लिए एल्गोरिदम को विनियमित किया जाना चाहिए। हानिकारक ध्रुवीकरण को सक्षम करने के लिए प्लेटफॉर्म को **जवाबदेह** ठहराया जाना चाहिए।

6. "मध्य मार्ग" की ओर सांस्कृतिक बदलाव तटस्थता को **नैतिक साहस**—संतुलन, सत्य और लोकतांत्रिक परिपक्वता के प्रति प्रतिबद्धता—के रूप में **पुनर्गठित** किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

ध्रुवीकरण केवल राजनीतिक स्थिरता को ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक जीवन की **आत्मा** को भी खतरे में डालता है। जब तटस्थता का मज़ाक उड़ाया जाता है और संयम को दंडित किया जाता है, तो समाज **नवाचार करने, समझौता करने और प्रगति** करने की अपनी क्षमता खो देता है।

इसलिए, **सम्मानजनक संवाद** की पुनर्स्थापना **वैकल्पिक नहीं**—यह **आवश्यक** है। तटस्थता का अभ्यास करना, जटिलता को स्वीकार करना, और खुले संवाद का बचाव करना समाज को ध्रुवीकरण के संक्षारक (corrosive) प्रभावों से बचा सकता है और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की आशा को पुनर्जीवित कर सकता है।

अंत में, **कलह पर समझ**, **क्रोध पर तर्क**, और **द्वैत पर संतुलन** को चुनना ही एक **लचीले और परिपक्व लोकतंत्र** की ओर का रास्ता है।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: "बढ़ते ध्रुवीकरण के युग में, तटस्थता और नागरिक संवाद की रक्षा करना एक नैतिक और लोकतांत्रिक अनिवार्यता बन गई है।" सार्वजनिक संवाद में घटती तटस्थता से उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा कीजिए और समाज में सम्मानजनक संवाद के पुनर्निर्माण के उपाय सुझाइए। (250 शब्द)